कोमल—जब कोई स्वर अपनी शुद्धावस्था (निश्चित स्थान) से नीचा होता है जो उसे कोमल विकृत कहते है।

तीव्र—जब कोई स्वर अपनी शुद्धावस्था से ऊपर होता है तो उसे तीव्र विकृत कहते हैं। ऊपर के उदाहरण में कोमल ग और तीव्र म विकृत हैं। सप्तक में षडज और पंचम के अतिरिक्त शेष स्वर जैसे रे, ग, ध और नी स्वर कोमल विकृत तथा म तीव्र विकृत होता है। इस प्रकार एक सप्तक में ७ शुद्ध, ४ कोमल और १ तीव्र स्वर, कुल मिलाकर १२ स्वर होते हैं। इनका क्रम इस प्रकार है—सा रे॒ रे ग॒ ग म मं प ध॒ ध नि॒ नि।

स्वरों को एक और दृष्टिकोण से विभाजित किया गया है,

(१) चल स्वर (२) अचल स्वर

चल स्वर—जो स्वर शुद्ध होने के साथ-साथ विकृत (कोमल अथवा तीव्र) भी होते हैं, जैसे रे, ग, म, ध और नी चल स्वर कहलाते हैं। शुद्ध स्वरों के अलावा रे, ग, ध और नी स्वर कोमल विकृत और म तीव्र विकृत होता है।

अचल स्वर—वे स्वर जो सदैव शुद्ध होते हैं, विकृत कभी नहीं होते अचल स्वर कहलाते हैं। सा और प, ये दो स्वर अचल कहलाते हैं, क्योंकि ये अपने स्थान पर अडिग रहते हैं। न तो ये कोमल होते हैं और न तीव्र ही। ये सदैव शुद्ध रहते हैं।

सप्तक

क्रमानुसार सात शुद्ध स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। हम पीछे बता चुके हैं कि सातो स्वरों के नाम क्रमशः सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं। इसमें प्रत्येक स्वर की आन्दोलन-संख्या अपने पिछले स्वर से अधिक होती है। दूसरे शब्दों में सा से जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं, स्वरों की आन्दोलन-संख्या बढ़ती जाती है। रे की आन्दोलन-संख्या सा से, ग की रे से व म की ग से अधिक होती है। इसी प्रकार प, ध और नी की आन्दोलन अपने पिछले स्वरों से ज्यादा होती है। पंचम स्वर की आन्दोलन संख्या सा से डेढ़ गुनी अर्थात् $\frac{3}{2}$ गुनी होती है। उदाहरण के लिये अगर सा की आन्दोलन-संख्या २४० है तो प की आन्दोलन-संख्या २४० की $\frac{3}{2}$ गुनी ३६० होगी। प्रत्येक सप्तक में सा के बाद रे, ग, म, प, ध, नि स्वर होते हैं। नि के बाद पुनः सां आता है और इसी स्वर से

दूसरा सप्तक शुरू होता है। यह सा अथवा तार सा पिछली सा से दुगुनी ऊँचाई पर रहता है और इसकी आन्दोलन-संख्या भी अपने पिछलें सा से दुगुनी होती है। उदाहरण के लिये अगर मध्य सा की आन्दोलन संख्या २४० है तो तार सा की आन्दोलन संख्या २४० की दुगुनी ४८० होगी। इसलिये सा, प और सां को एक साथ बजाने से उत्पन्न ध्वनि कानों को अच्छी लगती है।

सा से नि तक एक सप्तक होता है। नि के बाद दूसरा सा, (तार सा) आता है और इसी स्थान से दूसरा सप्तक भी शुरू होता है। दूसरा सप्तक भी नि तक रहता है और पुनः नि के बाद अति तार सा आता है, जहाँ से तीसरा सप्तक प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार बहुत से सप्तक हो सकते हैं, किन्तु क्रियात्मक संगीत में अधिक से अधिक तीन सप्तक प्रयोग में लाये जाते हैं। प्रत्येक सप्तक में ७ शुद्ध और ५ विकृत स्वर होते हैं। गायन-वादन में ३ सप्तक से अधिक स्वरों की आवश्यकता नहीं होती। अधिकांश व्यक्तियों का कण्ठ तीन सप्तक से भी कम होता है।

सप्तक के प्रकार

शास्त्रकारों ने तीनों सप्तकों के निम्नलिखित नाम रक्खे हैं–

(१) मन्द्र सप्तक (२) मध्य सप्तक और (३) तार सप्तक

मध्य सप्तक–जिस सप्तक में हम साधारणतः अधिक गाते-बजाते हैं मध्य सप्तक कहलाता है। इस सप्तक के स्वरों का उपयोग अन्य सप्तक के स्वरों की अपेक्षा अधिक होता है। यह सप्तक दोनों सप्तकों के मध्य में होता है, इसलिये इसे मध्य सप्तक कहा गया है। मध्य सप्तक के स्वर अपने पिछले सप्तक अर्थात् मन्द्र सप्तक के स्वरों से दुगुनी ऊँचाई पर और अगले सप्तक अर्थात् तार सप्तक के स्वरों के आधे होते हैं। इसमें ७ शुद्ध और ५ विकृत कुल १२ स्वर होते हैं।

मन्द्र सप्तक–मध्य सप्तक के पहले का सप्तक मन्द्र सप्तक कहलाता है। यह सप्तक मध्य सप्तक से आधा होता है अर्थात् मन्द्र सप्तक के प्रत्येक स्वर को आन्दोलन-संख्या मध्य सप्तक के उसी स्वर के आन्दोलन की आधी होगी। उदाहरणार्थ अगर मध्य सप्तक के प की आन्दोलन ३६० है तो मन्द्र प की ३६० की आधी १८० होगी, इसी प्रकार अगर मध्य सप्तक के म की आन्दोलन ३२० है तो मन्द्र म की आन्दोलन ३२० की आधी १६० होगी। मन्द्र सप्तक में भी ७ शुद्ध

तार सप्तक—मध्य सप्तक के बाद का सप्तक तार-सप्तक कहलाता है। यह सप्तक मध्य सप्तक का दुगुना ऊँचा होता है। दूसरे शब्दों में तार सप्तक के प्रत्येक स्वर में मध्य सप्तक के उसी स्वर से दुगुनी आन्दोलन रहती है, उदाहरणार्थ अगर मध्य सप्तक के रे की आन्दोलन-संख्या २७० है तो तार रे की आन्दोलन २७० की दुगुनी ५४० होगी। इसमें भी ७ शुद्ध स्वर और ५ विकृत स्वर कुल १२ स्वर होते हैं।

थाट

सप्तक के १२ स्वरों में से ७ क्रमानुसार मुख्य स्वरों के उस समुदाय को थाट कहते हैं, जिससे राग उत्पन्न होते हों। थाट को मेल भी कहा जाता है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में मेल शब्द ही प्रयोग किया गया है। 'अभिनव राग मंजरी' में कहा गया है—मेल स्वर-समूहः स्याद्राग व्यंजन शक्तिमान, अर्थात् स्वरों के उस समूह को मेल या थाट कहते हैं, जिसमें राग उत्पन्न करने की शक्ति हो। थाट के निम्नलिखित लक्षण माने गये हैं—

थाट के लक्षण :

(१) प्रत्येक थाट में अधिक से अधिक और कम से कम सात स्वर प्रयोग किये जाने चाहिये। इसका कारण यह है कि अगर थाट सम्पूर्ण (सात स्वर वाला) नहीं रहता है तो किस प्रकार उससे सम्पूर्ण रागों की उत्पत्ति मानी जायगी ?

(२) थाट सम्पूर्ण होने के साथ-साथ उसके स्वर स्वाभाविक क्रम से होने चाहिये। उदाहरण के लिये सा के बाद रे, रे के बाद ग व म, म के बाद प, ध और नी आने ही चाहिये। यह बात दूसरी है कि थाट में किसी स्वर का शुद्ध रूप न प्रयोग किया जाय, बल्कि विकृत रूप प्रयोग किया जाय। उदाहरणार्थ भैरव थाट में कोमल रे—ध और कल्याण थाट में तीव्र म स्वर प्रयोग किये जाते हैं।

(३) किसी थाट में आरोह-आरोह दोनों का होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि प्रत्येक थाट के आरोह और अवरोह में कोई अन्तर नहीं होता। केवल आरोह या अवरोह को देखने से ही यह ज्ञात हो जाता है कि वह कौन सा थाट है।

(४) थाट गाया-बजाया नहीं जाता। अतः उसमें वादी-सम्वादी, पकड़, आलाप-तान आदि की आवश्यकता नहीं होती।